

1536 तों 1539 ई करतारपुर दियां साखियां

### गुरू जी ने आतमा प्रमातमा दे सिधांत दा खंडन कीता

बटाले दे इलाके दी फेरी पाउन तों बाद गुरू साहब फिर करतारपुर धरमसाल विच बह लोकार्यो नूं संतोख रहे सन। हर दुखिया दरदवन्द जां जग्यासू गुरू दे दर तों हिरदा शांत कर रेहा सी। जिवे कि पिच्छे आ चुक्का गुरू साहब ओनां जग्यासूआं ते वद्ध तवज्जो दिन्दे सन जित्रां ने निरंकार-अकालपुरख बारे खोज करनी हुन्दी सी। जिस कारन साधूआं संतां दी आमद वी ज्यादा हुन्दी सी।

एसे तरां इक दिन सोदर रहरास दे वेले रबाबी दी गायी हेठ शशशाभित तुक्क:

आखन वाला क्या बेचारा ॥ सिफती भरे तेरे भंडारा ॥  
जिसु तूं देह तिसै क्या चारा ॥ नानक सचु सवारणहारा ॥

बाबत चंगी तरां टिंडां रगड़ायी (मुंडीए) बैरागी साधूआं ने समापती तों बाद बानी ते किंतू प्रंतु कर दित्ता। अखे इस जीव नूं अन्दर मौजूद प्रमातमा तों इलावा होर कौन है संवारनहारा? साधूआं ने केहा कि हर जीव विच जेहड़ी सुचेत आतमा है उह ही हर किसम दा कंटरोल कर रही है। उही आतम ही प्रमातमा है। रब्ब कोयी होर नहीं।

गुरू साहब बहुत आदर सतिकार नाल साधूआं दी सारी गल सुणी। साहब ने फरमायआ कि मुनी जेनों अकाल पुरख सिरफ साडे अन्दर तक्क ही मौजूद नहीं उह सरब व्यापक है। साडी आतमा उहदा इक अंश हो सकदी है। गुरू साहब ने सवाल कर दित्ता कि जे आतमा भाव साडा खुद ही प्रमातमा है तां इस जिय नूं पैदा कौन करदा है? रिजक कौन दिन्दा है? जे आतमा ही प्रमातमा है तां फिर कुझ जीवां नूं वद्ध ते कुझ नूं घट क्यो मिलदा है? जे आतमा ही प्रमातमा होवे तां थुड्डु वाले जीवां दा आपे कल्याण होवे। नाले फिर बाकीं दे असथुल जड़ह ब्रेहमंड दा इंतजाम कौन करदा है? किसने इह सारी सिसटी हुकम विच परोयी होयी है?

अजेहे ही कुझ सवाल करके गुरू साहब ने वजंत्रियां ते सारे हाजरीन दी संगत नाल शबद गाव्या:

आसा महला 1 ॥ काची गागरि देह दुहेली उपजै बिनसै दुखु पायी ॥ इह जगु सागरु द्रुतरु क्यु तरीऐ बिनु हरि गुर पारि न पायी ॥1॥ तुझ बिनु अवरु न कोयी मेरे प्यारे तुझ बिनु अवरु न कोइ हरे ॥ सरबी रंगी रूपी तूहै तिसु बखसे जिंसु नदरि करे ॥1॥ रहाउ ॥ सासु बुरी घरि वासु न देवे पिर स्यु मिलन न देइ बुरी ॥ सखी साजनी के हउ चरन सरैवउ हरि गुर किरपा ते नदरि धरी ॥2॥ आपु बीचारि मारि मनु देख्या तुम सा मीतु न अवरु कोयी ॥ ज्यु तूं राखह तिव ही रहना दुखु सुखु

देवह करह सोयी ॥3॥ आसा मनसा दोऊ बिनासत त्रेहु गुन आस निरास भई ॥ तुरियावसथा गुरमुखि पाईऐ संत सभा की ओट लही ॥4॥ ग्यान ध्यान सगले सभि जप तप जिसु हरि हिरदै अलख अभेवा ॥ नानक राम नामि मनु राता गुरमति पाए सहज सेवा ॥5॥

उपरंत गुरू साहब ने सरबव्यापक, सरगुन, निरगुन, अकाल पुरख बारे वख्यान दित्ता। हर पास धन्न गुरू नानक, धन्न गुरू नानक, वाहगुरू, वाहगुरू हो गई।

—♦—

### 'विद्या वीचारी तां परउपकारी ॥'व

करतारपुर ही इक दिन भायी लहने ने सवाल कर दित्ता कि कई लोक बहुत विद्या हासल करदे ने उसदा कुझ फायदा वी है। गुरू साहब ने समझायआ कि जे विद्या पढ़के करते दी खेड समझ आ गई है फिर तां विद्या सफल है। ग्यानवान बन्दा फिर घट घट विच उस निरंकार दा अंश वेखदा है ते जीवां नूं प्यार करन लगदा है। उसदे मन्न विच दया आ जांदी है।

साहब ने शबद रच्या:-

आसा महला 1 चउपदे ॥ विद्या वीचारी तां परउपकारी ॥ जां पंच रासी तां तीरथ वासी ॥1॥ घुघरू वाजे जे मनु लागै ॥ तउ जमु कहा करे मो स्यु आगै ॥1॥ रहाउ ॥ आस निरासी तउ सत्रासी ॥ जां जतु जोगी तां कायआ भोगी ॥2॥ दया दिगम्बरु देह बीचारी ॥ आपि मरै अवरा नह मारी ॥3॥ एकु तू होरि वेस बहुतेरे ॥ नानकु जानै चोजन तेरे ॥

भाव जो मनुक्ख दूज्यां नाल भलायी करन वाला हो गया है तां ही समझो कि उह विद्यया पा के विचारवान बण्या है। तीरथां ते निवास रक्खन वाला तदों ही सफल है, जे उस ने पंजे कामादिक वस्स कर लए हन। जे मन प्रभू-चरनां विच जुड़ना सिक्ख गया है तदों ही (भगतिया बण के) घुघरू वजाने सफल हन।

—♦—

### बुरे लोकां बाबत जदों भायी लहने दे शंके नविरत कीते

इक दिन गुरू साहब दे दरबार विच इक नहायत माडा (कोयी ठग, कूड्यार) बन्दा आ गया। मुकामी बन्दां ने झट्ट भायी लहने नूं सुचेत कीता कि इह बन्दा ठीक नहीं। भायी लहने ने उस बन्दे बाबत गुरू साहब नूं सुचेत कर दित्ता।

फिर उस माडे बन्दे ने जदों आ गुरू जी नूं मत्था टेक्या तां गुरू साहब ने गल नाल लायआ ते असीसां दित्तियां। इस ते समेत भायी लहना संगत हैरान होई।

कोयी दूसरे तीसरे दिन जदों मौका बण्या भायी लहने ने गुरू साहब नूं केहा कि जे इजाजत होवे तां मैं गल्ल

पुच्छा? गुरू साहब ने भायी लहने नूं केहा पुरखा तूं इक नही सौ गल पुच्छ। तूं हर गल पुच्छ। तैनुं सिक्खी सिंघांत समझ किवे आवेगा जे मन्न विच शके रह गए तां।

इस मौके फिर भायी लहने ने गुरू साहब कोलो पुच्छ्या कि वेखो सारी संगत उस बुरे बन्दे दे खिलाफ सौ फिर वी तुसी उस नूं गल नाल ला ल्या प्यार दित्ता। बाबा जी इस तरां क्यो?

गुरू साहब ने भायी लहने नूं समझायआ कि वेख जे कोयी चंगा है तां करते ने उस नूं चंगा बणायआ है जे कोयी मन्दा है तां ओसे मालक ने ही उस नूं माडा बणायआ है। इह निरंकार दी खेड है। मतलब जे तुसी जीव दे पिच्छोकड़ विच वेखोगे तां तुहानूं सभ ब्रहम ब्रहम ही नजर आउदा है। इस सच्च नूं जदों तुसी समझ जाओगे तां समझो अद्धी गुरमत दा तुहानूं पता लग ग्या।

उस दिन फिर भायी लहने ने बुर्या बाबत आपना वाहवा दिल्ल होला कीता ते कई सवाल कीते। गुरू साहब ने समझायआ कि चाहे कोयी किन्ना वी पापी है जे नाम दे लडूह लग जाएगा तां तर जाएगा।

फिर गुरू साहब ने समुची संगत दे नाल शबद गाव्या। रबाब ते संगत शहजादे ने कीती। ढोलकी दी अवाज पूरे बेले विच गूंज उठी।:-

आसा महला 1 ॥ इकि आवह इकि जावह आई ॥ इकि हरि राते रहह समायी ॥ इकि धरनि गगन मह ठउर न पावह ॥ से करमहीन हरि नामु न ध्यावह ॥1॥ गुर पूरे ते गति मिति पायी ॥ इहु संसारु बिखु वत अति भउजलु गुर सबदी हरि पारि लंघायी ॥1॥ रहाउ ॥ जिनु कउ आप लए प्रभु मेलि ॥ तिन कउ कालु न साकै पैलि ॥ गुरमुखि निरमल रहह प्यारे ॥ ज्यु जल अंभ ऊपरि कमल निरारे ॥2॥ बुरा भला कहु किस नो कहीए ॥ दीसै ब्रहमु गुरमुखि सचु लहीए ॥ अकथु कथउ गुरमति वीचारु ॥ मिलि गुर संगति पावउ पारु ॥3॥ सासत बेद सिंमृति बहु भेद ॥ अठसठि मजनु हरि रसु रेद ॥ गुरमुखि निरमलु मैलु न लागै ॥ नानक हिरदै नामु वडे धुरि भागै ॥4

—◆—

**‘इह घाल कमायी आउन वालियां सिक्ख पीड़ियां लई’ - बाबे ने जवाब दित्ता**

**जदों भायी लहना बेहोश हो डिग्गा◆**

गुरू साहब डेढ पहर रात रहन्दे ही रावी ते इशनान करन रवाना हो जांदे सन। इक सिक्ख नाल हुन्दा सी। गुरू साहब लंमा समां दर्या विच बिताउदे सन। नाल दा सिक्ख कंठे ते बह उडीक कर्या करदा सी। साहब टुब्बी वी लंमी मारदे सन।

इक वेरां दी गल है गुरू साहब नाल भायी लहना ग्या। गुरू साहब काफी समां दर्या विच नहाउदे रहे। ठंड दे दिन सन नाले झक्खड़ वी वग रेहा सी। कंठे ते बैठे भायी

लहने नूं अजेही ठंड लग्गी कि बेहोश हो के लेट ही ग्या। जदों गुरू साहब बाहर निकले तां की वेखदे हन कि लहना बेसुरत प्या है। गुरू साहब ने लहने नूं पैर नाल हिलायआ कि पुरखा! उठो चलीए।

लहने नूं होश आ गई। उठ्या। गुरू साहब ने पुच्छ्या लहना की गल तैनुं नींद आ गई सी? भायी लहने ने केहा गुरू साहब जदों तुसी तां दर्या विच वडूह गए इशनान करन बाद मै कंठे आ बैठा। मैनुं बहुत ठंड लग्गी ते कांबा छिड्या। कुझ समें बाद मैनुं कुझ पता नही कि मेरे नाल की होया।

तुहाडे पैर दी जिवे मैनुं छोह मिली जिवें तेरी लत्त वज्जी मेरे अन्दर क्रोड़ां सुरजां दा निघ्य आ ग्या। धत्र हो गुरू साहब तुसी। मै बलैहार हां तुहाथो।

पर भायी लहने ने मुशकल सवाल कर दित्ता- जदों रावी तों करतारपुर साहब नूं परत रहे सन तां रसते विच भायी लहने ने गुरू साहब नूं आखिर पुच्छ ही ल्या, "गुरू जी तुसी अकाल पुरख नाल इक मिक्क हो। फिर क्यो तुसी आपने सरीर नूं एना कोहदे हो? क्यो इनी कठन तपस्स्या करदे हो?"

गुरू साहब ने जवाब दित्ता, "पुरखा! पहली गल तां मै आपने सरीर नूं कोहदा नही हां। जेहड़ी तुहानूं तपस्स्या नजर आउदी है इह मेरा अनन्द है। नाम तों बिनां मेरा सरीर खुसदा है। मेरी इह तपस्स्या तां अकाल पुरख अग्गे अरदास हुन्दी है कि मेरे सिक्खां दा निरंकार तक्क राह सुखाला होवे। ओनां नूं औकड़ां नां आउन। दुनियां सरगुन रूप विच निरंकार नूं मन्नदी है। मेरे सिक्ख ने सरगुन ते निरगुन रूप दोवां विच निरंकार दा चित्रन करनां हुन्दा है जो मुशकल मारग है। मेरा सिक्ख इस गुरमत दे मारग ते डोले नां, उहदा भरोसा बणया रहे ते उहदी मुकती होवे। इहो मै निरंकार कोलो मंगदा रहत्रा वा। सौ मेरियां इह अरजोईआं सिक्खां दियां आउन वालियां पीड़ियां लई हन। बाकी इशनान नाल मेरी सुरत सुचेत हुन्दी है।"

गुरू साहब दे रावी विच इशनान ते इस घाल कमायी दे नितनेम प्रथाय ही बाद विच गुरू अंगद देव ने इह शबद आख्या सी:-

चउथै पहरि सबाह कै सुरत्या उपजै चाउ ॥ तिना दरियावा स्यु दोसती मनि मुखि सचा नाउ ॥ ओथै अंमतु वंडीए करमी होइ पसाउ ॥ कंचन कायआ कसीए वंत्री चडै चड़ाउ ॥ जे होवै नदरि सराफ की बहुड़ि न पायी ताउ ॥

—◆—

**अंतले दिनां विच तां बाबा लुक्कदा फिरदा सी◆**

**करतारपुर दे प्रबंधक**

सुलतानपुर छड्डुन उपरंत गुरू साहब ज्यादातर पंजाबों बाहर ही रहे सन। पर फिर वी 1530 ई तक्क गुरू साहब दी प्रसिधी चार चुफेरे हो चुक्की सी। हालां थाड़ा

समां ही अजे करतारपुर टिके सी कि लोक वहीरां घत घत करतारपुर आ रहे सन। इक वेला तां अजेहा आ गया कि करतारपुर विखे भीड़ां नूं संभालना वी मुशकल हो जांदा सी। संगत विच प्रवचना तों बाद हर कोयी आपने निज्जी मसल्यां दे हल्ल लई गुरू साहब दा अशीरवाद लैन दी दौड़ विच सी। करतारपुर साहब तीरथ असथान बण चुक्का सी ते लोकां दा मन्नना सी कि जेहड़ा वी कोयी किसे किसम दी कामना मन्न विच लै के आउदा है उस दी इछा पूरी हुन्दी है। इथे हर कोयी आ रेहा सी। चाहे कोई:-◆

उदासी होवे, अतीत (त्यागी साधू), भगवान मुंडिया (रोडा भोडा साधू) बैसनो, ब्रहमचारी, जोगी, दिगम्बर, सन्न्यासी, तपसी, दुधाधारी, भगतियां, रबाबी, बिरही, भेखधारी, सिधु, साधु फकीर, कामल दरवेश, साबर फकीर, गउस, अउलिया, उलमाउ, खोजी, वादी, पीर, पैकम्बर, हिन्दू, मुसलमान, ग्रहसती, उदासी, राजा रंक, जती सती, हठी, तपी, खतरा, ब्रहमन, वसु, सूद, चारे वरन, पंडत, कवित, कवीसुर, गुनीजन..

इस करके गुरू साहब अकसर ही करतारपुर साहब तों भायी लहने नूं लै के रात वेले ही रवाना हो जांदे सन। जिस वी इलाके विच हुन्दे सन ओथे इक दो दिन तों वद्ध नही सन टिक सकदे। कई वारी चुप्प चुपीते जोगियां दे डेरे जा अराम कर्या करदे सन।

धरमसाल दे प्रबंधक-

सोठी मेहरबान वाली जनमसाखी विच कुझ इस तरां आउदा है:-

1. तद चार चुफेरे बाबा नानक, गुरू नानक हो रेहा सी। पहलों मरदाना रबाबी चलाने तक्क बाबे दे नाल रहआ।
2. इस हलीमी राज विच वजीर सी - भायी लहना (बाद दे गुरू अंगद देव)
3. भंडारी, खजानजी ते घर बार- शेख मालो अते सरवन गुड्डी -गुड्या
4. लंगर दी मुखी - माता घुंमी (माता सुलक्खनी चोणी) नाल मदद बाबा सीचन्द अते लखमी दास कर्या करदे सन।

—◆—

### गुरू जी ने भायी लहने नाल भागोवाल दी छिंझ वेखी\*

गुरू साहब अज्ज दे वटाले इलाके विच घुंम फिर रहे सन कि भायी लहना (बाद विच दूसरे गुरू, गुरू अंगद) आप जी नूं करतारपुर तों आ मिले। गुरू साहब नूं बेनती कीती कि अनेकां संगतां तुहाडा करतारपुर विखे इंतजार कर रहियां हन। गुरू साहब करतारपुर नूं रवाना हो गए।

रसते विच पिंड भागोवाल पैदा है जो बटाले तो 10 कि. मी. पहाड़ करतारपुर दे रसते विच पैदा है। इह इतहासिक पिंड जट्टा दी गोत काहलों दा मूल पिंड है।

केहा जांदा है कि काहलों लोक धार (धारा नगरी) मद्ध प्रदेस तों उठ के इथे आ वसे सन ते बाद विच अमृतसर, गुरदासपुर, नारोवाल अते स्यालकोट जिल्यां विच फैल गए। साडी खोज अनुसार काहलों वी किसे ईरानी इलाके 'चों ही उठ के आए ने। हो सकदा 'कालों पहाड़ियां' दी वादी 'चों आए होण।

भागोवाल दी छिंझ बहुत प्रसिद्ध है।

गुरू साहब जदों भागोवाल थांनी निकले तां ओथे छिंझ मैला चल रेहा सी। घोल, कबड्डी ते छाल मारन दे मुकाबले ढोल दे डगे ते हो रहे सन। कोयी नप्या जा रेहा सी कोयी उट्टु रेहा सी। इस मौके इस वड्डे अखाडे विच किते हो रही बेइनसाफी वी गुरू साहब दे नजरी चड़ही। लगदा है किते कोयी छोटी जात दा भलवान माली जित रेहा सी कि हेरा फेरी करके नतीजा उलट ऐलान्या गया। नतीजा ऐलानन पिच्छे किसे फकीर फक्कर नूं ढाहड्यां वरत ल्या भाव अखौती फकीर ने हेरा फेरी नाल जिते भलवान नूं सिरा पायो बखश दित्ता। इस ते गुरू साहब ने इनां अखौती धारमिक बन्द्यां दे किरदार दा वी खंडन कीता ते नाल ही इस मौके शबद उचार्या जो आसा दी वार विच शशशोभित है:-

मः 1 ॥ वदी सु वजगि नानका सचा वेखै सोइ ॥ सभनी छाला मारिया करता करे सु होइ ॥ अगै जाति न जोरु है अगै जीउ नवे ॥ जिन की लैखै पति पवै चंगे सेयी केइ ॥

गुरू साहब भायी लहने नूं दस्स्या कि रब्ब दे घर विच कोयी सिफारश जां जोर नही चलदा। ओथे तां सच्च नूं ही सिरापा मिलदा है।

एसे लहजे विच बाद विच पंचम पातशाह ने फिर शबद रच्या सी:-

हउ गोसायी दा पहलवानड़ा ॥ मै गुर मिलि उच दुमालडा ॥ सभ होयी छिंझ इकठिया दयु बैठा वेखै आपि जीउ ॥ 17 ॥ वात वजनि टंमक भेरिया ॥ मल लथे लैदे फेरिया ॥ नेहते पंजि जुआन मै गुर थापी दिती कंडि जीउ ॥ 18 ॥ सभ इकठे होइ आया ॥ घरि जासनि वाट वटायआ ॥ गुरमुखि लाहा लै गए मनमुख चले मूलु गवाय जीउ ॥

अते गुरमुख दी अंतम जित्त दा भरोसा दिवायआ।

सोठी मेहरवान ने वी एसे प्रसंग दौरान छिंझ बाबत गुरू साहब नूं सम्बोधन करके दो सतरां कहियां सन:-

नजरि भलेरी नानका, राखहु वारि वरजि ॥ नजरि देखहु सुभ दिसटि की, जे खाधा लोड़ै रजि ॥ रजि खाय जे पंजां मारे, गुरमुखि रहह सहज ॥ भर्या भाडा नानका, भै विच रखहु कजि ॥ सचे के दरि सचो सुणीए, छूटहुगे कितु पजि ॥ घनी नेहपग नानका छिंझ पई दरि वजि ॥

—◆—

## गुरू जी तुसी नाम जप्पन दा कहन्दे हो, नाम जपघां तां मत्र किते दा किते चला जांदा है

इक दिन लहौर तों कुझ पंडत इकठे हो गुरू दरबार आ हाजर होए। लंगर पानी छक्कन उपरत उनां पुच्छ गिच्छ अरंभी तां संगत ने उनां नूं भायी लहने नाल मिला दित्ता। नाम गुरमत बाबत उनां दे कुझ शंके सवाल सन। भायी लहने ने चाहआ कि इह जग्यासू खुद गुरू साहब कोलों ही आपने शंके नत्रित करन।

भायी लहने ने गुरू साहब नूं जा के खबर दिती कि लहौर तों कुझ प्रेमी आए ने उनां दे मत्रां विच नाम दे सिधांत बाबत कुझ शंके ने उह तुहानूं मिलना चाहन्दे ने।

गुरू साहब आप अगे हो के उनां नूं मिलन धरमसाल विखे आए। झुक्क के नमसकार कीती सति करतार केहा। जग्यासू दे साहमने गुरू साहब न्यु जांदे सन तां कि अगले नूं सवाल करन विच कोयी प्रेशानी नां होवे। क्युकि सवाल आपां बराबर दे बन्दे कोलो ही पुच्छ सकदे हां। उच्च पदवी ते बराजमान बन्दे नाल खुल्ल के सवाल जवाब जां चरचा नही हो सकदी।

उनां दे मुखी ने गुरू साहब नूं केहा कि गुरू जी तुहाडा इह जेहडा नाम दा सिधांत है इह विअर्थ है। असी बथेरी कोशिश कीती है नाम जप्पन वेले मत्र तां किते दा किते पहुंच जांदा है। इस गल ते बाकी दी संगत ने वी हामी भरी। पंडतां ने केहा कि इस नालों फिर करम कांड दा सिधांत बेहत्र नही?

फिर गुरू साहब ने सारी संगत दे सनमुख समझायआ कि इह सच्च है कि नाम जपघा मत्र उडारियां भरेगा पर पहलां तुसी आपनी हऊमे दे नाल वी जूझना है। जित्री हऊमे प्रबल होवेगा उनां ही नाम जप्पना मुशकल होवेगा। जदों तुसी हउमै दा पड़दा पाड़ सुटोगे तों तुहानूं सच्च दिसना शुरू हो जाएगा। गुरू साहब ने समझायआ कि जित्रा चिर साडी हऊमे नही घटेगी साडी सच्चे नाल प्रीत नही बण आएगी। फिर जदों नाम रतन दी प्रापती हो गई फिर तां अनन्द ही अनन्द है। सो आपनी हऊमे नाल जदोजहद करो। मौत नूं सवीकार करो। (वेखो हऊमे अते नाम दा सिधांत पत्रा 108)

इस मौके नाले गुरू साहब ने फिर समझायआ कि करम कांड किवे फजूल है।

फिर गुरू साहब ने जदों आसा राग विच शबद गाव्या तां इक पासे रबाब ढोलकी खड़ताला आदि दी धुत्री सी दूसरे पासे पंछियां ने नालदे रुक्खां ते आपना राग अरंभ्या सी। जंगल विच मंगल सी। सारी संगत रल के गुरू साहब दे पिच्छे गारही सी:-

आसा महला 1 ॥ निवि निवि पाय लगउ गुर अपुने आतम रामु नेहार्या ॥ करत बीचारु हिरदै हरि रव्या हिरदै देखि बीचार्या ॥1॥ बोलहु रामु करे निसतारा ॥ गुर परसादि रतनु हरि लाभै मिटै अग्यानु होइ उजियारा

॥1॥ रहाउ ॥ रवनी रवै बंधन नही तूटह विचि हउमै भरमुन जायी ॥ सतिगुरु मिलै त हउमै तूटै ता को लेखै पायी ॥2॥ हरि हरि नामु भगति प्रिय प्रीतमु सुख सागरु उर धारे ॥ भगति वखलु जगजीवनु दाता मति गुरमति हरि निसतारे ॥3॥ मन स्यु जूझि मरै प्रभु पाए मनसा मनह समाए ॥ नानक क्रिपा करे जगजीवनु सहज भाय लिव लाए ॥4॥

अंत विच लहौरियां ने रल्ल के गुरू साहब नूं अरजोयी कीती कि किते लहौर विच वी संगतां नूं दरशन द्यो। गुरू साहब ने लहौर जाना प्रवान कीता।



## भायी लहने ने पुच्छ्या बाबा जी 'नाम' दा की मतलब? ♦

इक वेरां गुरू साहब भायी लहने नूं हुकम कर रहे सन कि पुरखा कोयी गल समझ नां आए तां भावे मेरे कोलों हज़ार वार पुच्छ लई पर तै नूं हर गल दी समझ होनी जरूरी है। झकना नही।

इस भरोसे करके झकघां झकघां भायी लहने ने पुच्छ ल्या कि गुरू जी मै नूं नाम दे सिधांत बारे अजे वी कई भुलेखे पै जांदे ने। इस सिधांत दे कित्रे कु पहलू ने? तुसी हर गल ते नाम ते ही जोर दिन्दे हो?

गुरू साहब ने केहा 'नाम' दा सिधां जेहा मतलब है सरबव्यापक निरंकार दी हौद नूं मत्रना ते उहदे अगे सीस झुका देना कि करन कारन समर्थ सिर्फ निरंकार अकाल पुरख ही है। हुन सवाल उठदा फिर एहो जेहे सरब व्यापक निरंकार प्रभु दे असी केहडी वसतू भेट कर सकदे हां? जवाब सिद्धा जेहा कि आपने जीवन विच सच्च नूं धार लयो। झूठ तों किनारा कर लयो। जदों तुसी रजा विच आ जाओगे तां उह तुहानूं आपने चरनां विच बैठन नूं थां देवेगा। उहदा दरबार अजेहा अचुक्क है कि तुहाडी पल पल दी सेवा दा हिसाब रखदा है उह।

साहब ने शबद उचार्या:

रामकली महला 1 ॥ तुधनो निवनु मत्रनु तेरा नाउ ॥ साचु भेट बैसन कउ थाउ ॥ सतु संतोखु होवै अरदासि ॥ ता सुनि सिदि बहाले पासि ॥1॥ नानक बिरथा कोइ न होइ ॥ ऐसी दरगह साचा सोइ ॥1॥ रहाउ ॥ प्रापति पोता करमु पसाउ ॥ तू देवह मंगत जन चाउ ॥ भाडै भाउ पवै तितु आइ ॥ धुरि तै छोडी कीमति पाय ॥2॥ जिनि किछु किया सो किछु करै ॥ अपनी कीमति आपे धरै ॥ गुरमुखि परगटु होआ हरि राय ॥ ना को आवै ना को जाय ॥3॥ लोकु धिकारु कहै मंगत जन मागत मानु न पायआ ॥ सह किया गला दर किया बाता तै ता कहनु कहायआ ॥

होर साहब ने फरमायआ: (होर वी देखो सफा 310 ते) जिस नो बखसे सिफति सालाह ॥ नानक पातिसाही पातिसाहु ॥

—◆—

### 'एकलड़ी बन माहे' ◆◆

करतारपुर बैठ्यां बैठ्यां गुरू साहब दी अजेही मौज आई कि गुरू साहब वेयीं पार करके नाल नाल ज्यो रवाना होए, कोयी 4- 5 कि. मी. लहन्दे नू निकल गए जिये वेयीं ते दर्या दा मेल हुन्दा है। वड्डे वड्डे डुंम पए होए सन। दुआले सरकड़ा ते काह (लंमा घाह)। मीलां तक्क नां बन्दा, नां बन्दे दी जात। ना कोयी हऊमे दा झेड़ा। नां किधरे कोयी गुस्सा, नां नराजगी। देग वेईं चुप्प चुपीते रावी नाल मिल रही सी। कदी कदायी किसे मच्छी दी उच्चल कुद् दी अवाज आ जांदी सी। बाकी सभ शांत सी।

ओथे बैठ्यां बैठ्यां गुरू साहब नू पती प्रमेशर दा अजेहा वैराग छुट्या कि प्रसिद्ध सबद ओथे फिर रच्या अते उच्ची सुर नाल गाव्या। ऐना कु उच्चा कि बेला गूज उठ्या। सिक्खां नू पता लगग गया कि बाबा किथे बैठा है:-

गउड़ी छंत महला 1 ॥ सुनि नाह प्रभू जीउ एकलड़ी बन माहे ॥ क्यु धरिगी नाह बिना प्रभ वैपरवाहे ॥ धन नाह बाझहु रह न साकै बिखमरैनि घणेरिया ॥ नह नीद आवे प्रेम भावै सुनि बेनंती मेरिया ॥ बाझहु प्यारे कोइ न सारे एकलड़ी कुरलाए ॥ नानक सा धन मिलै मिलायी बिनु प्रीतम दुखु पाए ॥ 1 ॥ पिरि छोडि अडी जीउ कवनु मिलावै ॥ रसि प्रेमि मिली जीउ सबदि सुहावै ॥ सबदे सुहावै ता पति पावै दीपक देह उजारे ॥ सुनि सखी सहेली साचि सुहेली साचे के गुन सारै ॥ सतिगुरि मेली ता पिरि रावी बिगसी अंमृत बानी ॥ नानक सा धन ता पिरु रावे जा तिस के मनि भानी ॥ 2 ॥ मायआ मोहनी नीघरिया जीउ कूडि मुठी कूड्यारे ॥ क्यु खलै गल जेवडिया जीउ बिनु गुर अति प्यारे ॥ हरि प्रीति प्यारे सबदि वीचारे तिस हीं का सो होवै ॥ पुत्र दान अनेक नावन क्यु अंतर मलु धोवै ॥ नाम बिना गति कोइ न पावै हठि निग्रह बेबानै ॥ नानक सच घरु सबदि सिजापै दुबिधा महलु कि जानै ॥ 3 ॥ तेरा नामु सचा जीउ सबदु सचा वीचारो ॥ तेरा महलु सचा जीउ नामु सचा वापारो ॥ नाम का वापारु मीठा भगति लाहा अनदिनो ॥ तिसु बाझु वखरु कोइ न सूझै नामु लेवहु खिनु खिनो ॥ परखि लेखा नदरि सार्ची करमि पूरै पायआ ॥ नानक नामु महा रसु मीठा गुरि पूरै सचु पायआ ॥ 4 ॥ 2

क्युकि दूरो दूरो प्रेमी गुरू साहब दे दरशनां लई आया करदे सन जिवे पता लग्गा कि बाबा रावी कंठे बैठा हौली हौली संगत ओथे ही जुड़ गई। संगत ने शबद गायन विच साथ दिता। फिर गुरू साहब ओथो चल्ल तुरे। रसते च जदो आ रहे सन तां दो तिन्र मुहतबर बन्धां गुरू साहब नू अरज कीती बाबा जी बेले विच जंगली जानवर बहुत हन खास करके बघ्याड़ आम ही वेखे जांदे हन किरपा करो ते इस तरां इकल्ले जंगल विच नां बैठ्या करो। होर वी कई बलावां हन।

इह सुन गुरू साहब फिर इक बन्ने ते बह गए ते शबद

शुरू कर दिता।

गउड़ी महला 1 ॥ जिनि अकथु कहायआ अष्यो पियाया ॥ अन भै विसरे नामि समायआ ॥ 1 ॥ क्या ड्रीऐ डू डह समाना ॥ पूरे गुर कै सबदि पछाना ॥ 1 ॥ रहाउ ॥ जिमु नर रामु रिदै हरि रासि ॥ सहजि सुभाय मिले साबासि ॥ 2 ॥ जाह सवारै साझ ब्याल ॥ इत उत मनमुख बाधे काल ॥ 3 ॥ अहनिसि रामु रिदै से पूरे ॥ नानक राम मिले भ्रम दूरे ॥ 4 ॥ 11 ॥\*\*

गुरू साहब ने फरमायआ कि अकाल पुरख दी सिफत सलाह दे शबद ने मेरे सारे डर दूर कर दिते होए ने।

—◆—

### 'सभि नाद बेद गुरबानी' ◆◆

गुरू साहब करतारपुर साहब बिराजमान सन कि इक जोगियां दा टोला आ पडुंघ्या। इनां जोगियां विचो इक जोगी गुरू साहब दी संगत पहलां कर चुक्का सी अते जदो दूसरे साथी जोगियां विच नाम दा प्रचार कीता तां अगले विरोध विच आ गए। विरोधियां दा कहना सी कि नाम जपन नाल अनहद धुन्न किवे वज्जेगी ते जोत दा प्रकाश किवे होवेगा। क्युकि जोगी लोक 'नाद जोत' नू ही सभ कुझ समझ लैदे नै।

लंगर पानी छक्कन तो बाद गुरसिक्ख जोगी ने जा गुरू साहब कोल अरज कीती कि बाकी जोगी आ बहस बाजी करदे ने कि 'नाद-जोत' नाम नाल किवे प्रगट हो जाएगी बिनां ध्यान लायआ?

गुरू साहब ने समझायआ कि जदो तुहाडी हऊमे घट जावेगी तां बहुत चमतकार होणगे। बस पिच्छलियां गल्लां छड्डु के नाम दे लड़ लग्ग जायो। तुहाडे नाद जोत वी प्रगट हो जाएगी। गुरबानी भाव नाम विच सभि कुझ आ जांदा है। साहब ने शबद रच्या जो सारी संगत नाल रल के गायआ:-

रामकली महला 1 ॥ जा हरि प्रभि किरपा धारी ॥ ता हउमै विचहु मारी ॥ सो सेवकि राम प्यारी ॥ जो गुर सबदी बीचारी ॥ 1 ॥ सो हरि जनु हरि प्रभ भावै ॥ अहनिसि भगति करे दिनु राती लाज छोडि हरि के गुन गावै ॥ 1 ॥ रहाउ ॥ धुनि वाजे अनहद घोरा ॥ मनु मान्या हरि रसि मोरा ॥ गुर पूरे सचु समायआ ॥ गुरु आदि पुरखु हरि पायआ ॥ 2 ॥ सभि नाद बेद गुरबानी ॥ मनु राता सारिगपानी ॥ तह तीरथ वरत तप सारे ॥ गुर मिल्या हरि निसतारे ॥ 3 ॥ जह आपु गया भउ भागा ॥ गुर चरनी सेवकु लागा ॥ गुरि सतिगुरि भरमु चुकायआ

◆ सोदी 2-309, व सोदी:2 अनुसार, सोदी 2-242, बी 40-96 अते सोदी 2-1144, सिक्खी दा सिधांत है कि जेहडा सच्चे दिल्लो गुरू नानक दे पंथ विच शामिल हो गया उह जीवन मुक्कत हो जावेगा। तां ही ते पंचम पातशाह ने इह शबद केहा सी:- "मै मूरख की केतक बात है कोटि पराधी तर्पारे ॥ गुरु नानकु जिन सुण्या पेख्या से फिरि गरभासिन पर्यारे ॥"

◆ सोदी 2-145, \*सोदी 2- 304, य सोदी 2-246, ◆ सोदी अनुसार,

◆ सोदी 2- 361, \*\* सोदी 2- 424, ◆◆ सोदी 2- 365 अते सोदी 2-

॥ कहनु नानक सबदि मिलायआ ॥4॥10॥

॥4॥7॥

इस दे बावजूद इक जोगी सिर अड़ायी ही जा रेहा सी अखे जी गिसत विच रह के नाद-जोत किवे प्रगट हो सकदी है। गुरू साहब ने उनू बहुत प्रेम पूरबक समझायआ कि वेख भायी कपड़े लौड़े खान भोजन वासते तू गिसती दे घर हाजर हो जांदा है। फिर गिसत किधरो माड़ा हो गया। गिसत तां सगों सन्यास नालो उतम हो गया। साहब ने फिर शबद रच्या ते संगत दी शमूलियत नाल गायआ:-

रामकली महला 1 ॥ छादनु भोजनु मागतु भागै ॥ खुध्या दुसट जलै दुखु आगै ॥ गुरमति नही लीनी दुरमति पति खोयी ॥ गुरमति भगति पावे जनु कोयी ॥1॥ जोगी जुगति सहज घरि वासै ॥ एक त्रिसाँटि एको करि देख्या भौख्या भाय सबदि त्रिपतासै ॥1॥ रहाउ ॥ पंच बैल गडिया देह धारी ॥ राम कला निबहै पति सारी ॥ धर तूटी गाडो सिर भारि ॥ लकरी बिखरि जरी मंझ भारि ॥2॥ गुर का सबदु वीचारि जोगी ॥ दुखु सुखु सम करना सोग ब्योगी ॥ भुगति नामु गुर सबदि बीचारी ॥ असथिरु कंधु जपै निरकारी ॥3॥ सहज जगोटा बंधन ते छूटा ॥ कामु क्रोधु गुर सबदी लूटा ॥ मन मह मुन्द्रा हरि गुर सरना ॥ नानक राम भगति जन तरना ॥4॥11॥

हर कोयी धन्न गुरू नानक, वाहगुरू..कह रेहा सी।

—◆—

### निरंकार नाल प्रीत अजेही होवे जिवे मच्छी दी पानी नाल है\*

गुरू साहब रावी दे कंठे बैठे सन। इक छोटी जेही मच्छी पानी विच छालां मार रही सी कि भुड़कदी भुड़कदी पाणीयो बाहर रेते ते आ डिग्गी। गुरू साहब ने हुकूम करके मच्छी वापस पानी विच सुटा दिती। नाल बैठे सिक्खां नूं सम्बोधन हुन्दे होए केहा कि निरंकार साडे ते ऐसी बखशश करे कि साडी अकाल पूरख नाल अजेही प्रीत हो जाए जिवे मच्छी दी पानी नाल है। जे निरंकार नूं याद नां करीए ते ओसे पल साडी मौत होवे। गुरू साहब ने होर केहा कि वेखो नां मायआधारी बन्दा मायआ तों विछड़ के किवे मर मर जांदा है अजेही प्रीत साडी रब्ब नाल क्यो नही बण पाउदी?

साहब रावी कंठे ही शुरू हो गए। उच्ची सुर विच ते शबद रच्या:

सोरठि महला 1 ॥ ज्यु मीना बिनु पाणीए त्यु साकतु मरै प्यास ॥ त्यु हरि बिनु मरीए रे मना जो बिरथा जावै सासु ॥1॥ मन रे राम नाम जसु लेइ ॥ बिनु गुर इहु रसु क्यु लहउ गुरू मेलै हरि देइ ॥ रहाउ ॥ संत जना मिलु संगती गुरमुखि तीरथु होइ ॥ अठसठि तीरथ मजना गुर दरसु परापति होइ ॥2॥ ज्यु जोगी जत बाहरा तपु नाही सतु संतोखु ॥ त्यु नामै बिनु देहरी जमु मरै अंतरि दोखु ॥3॥ साकत प्रेम न पाईए हरि पाईए सतिगुर भाय ॥ सुख दुख दाता गुरु मिलै कहनु नानक सिफति समाय

### "बाबा जी असी जांदै" मेरा मन्न नही इनां गल्लां विच लग्गदा।◆

इक जोगियां दा शरधालू कुझ दिनां तों करतारपुर साहब रह रेहा सी। पहलां इह त्रिकुट्टी ते ध्यान वी लायआ करदा हुन्दा सी। गुरू साहब नाल इस दी पुरानी जान पछान सी। पर अज्ज कुझ काहला पै गया कि केहड़े गोरख धंधे विच मैं लग्ग गया हां: नाम! नाम!! नाम!!!

"कहन लग्गा बाबा मेरे कोल नही इह अजाब हुन्दा। मैं चल्या।"

गुरू साहब ने सारी संगत विच उस नूं समझायआ कि जदों असी नाम जपदे हां रब्ब ते कोयी अहसान नही करदे। इह तां प्रेम दा मारग आ फिर जिवे इह बन्दा कह रेहा सी कि ध्यान नही बइझदा। गुरू साहब ने उपदेश कीता कि सच्च बारे सोचो आपे ध्यान लग्ग जाएगा। आपनी असलियत सोचो। आपने अंत समें बारे सोचो। वेखो फिर किद्वी छेती मायआ मोह तों छुटकारा हुन्दा है। भायी करतें दी खेड नूं पछाणो। हउमै दे पसारे नूं पछाणो। गुरू साहब दा कुझ अजेहा समझाउना होया कि ग्यानी ध्यानी हुन निमरता विच आ चुक्का सी। हंकार छुट्ट ग्या।

गुरू साहब ने दीवान विच बैठी सारी संगत दी शमूलियत नाल शबद गाव्या:

गउड़ी महला 1 ॥ उलट्यो कमलु ब्रहमु बीचारि ॥ अमृत धार गगनि दस दुआरि ॥ त्रिभवनु बंध्या आपि मुरारि ॥1॥ रे मन मेरे भरमु न कीजै ॥ मनि मानिए अमृत रसु पीजै ॥1॥ रहाउ ॥ जनमु जीति मरनि मनु मान्या ॥ आपि मूआ मनु मन ते जान्या ॥ नजरि भई घरु घर ते जान्या ॥2॥ जतु सतु तीरथु मजनु नामि ॥ अधिक बिथारु करउ किसु कामि ॥ नर नारायन अंतरजामि ॥3॥ आन मनउ तउ पर घर जाउ ॥ किसु जाचउ नाही को थाउ ॥ नानक गुरमति सहजि समाउ ॥4॥

ग्यानी ध्यानी बन्दे दा हंकार दूर हो चुक्का सी। अक्खां विच हंझू। कहन लग्गा बाबा बस्स मैं तेरा। मार भावे रक्ख। वाहगुरू वाहगुरू!

—◆—

### 'बाबा सच्ची सच्ची दस्सी तूं रब्ब वेखिए? उह केहो जेहा है?'

गुरू साहब करतारपुर विखे सन कि इक दिन इक बजुरग वैशानो भगत जेहलम इलाके दे किसे शहरो चल आया। सेवादारां आओ भगत कीती। लंगर पानी छकायआ। कहन लग्गा मैं नूं गुरू नानक नाल मिलायो। सेवादारां केहा कि हुन शाम दे दीवान विच हाजरी भरनां ते खुल्ल के गुरू साहब नाल गल करनां। दीवान वेले फिर भगत हाजर होया ते खड़ा हो के

नमसकार करन तों बाद अरजोयी करन लग्गा कि बाबा जी तेरी चुफेरे उपमा है कि तुसी रब्ब नूं मिले हो। मैं इलाके विच प्रचलत लग्ग पग सारे धारमिक ग्रंथ पड़े ने वेदां तों लै के सिम्रतियां, पुरान आदि इथो तक्क मैं सामी मज्हबां दे गरंथ कुरान आदि वी पड़्यां हां। मेरे मन्न विच रब्ब बारे जानन दी इछा है। दुनियां कह रही है कि बाबे नानक ने रब्ब वेख्या है किरपा करके दस्सो कि उह केहो जेहा है?

गुरू साहब ने केहा कि बलेहार जाना वां उस आतमा तों जिस नूं निरंकार बारे जानन दी अभिलाखा है। गुरू साहब ने केहा कि बहुती दुनिया धारमिक होन दा वेखो वेखी भेख करदी है पर कदी पैदा करन वाले बाबत सोचदे घट्ट ही हन।

गुरू साहब ने केहा 'हां' मैं भागां वाला हां मैं सरबव्यापक अकाल पुरख दे साखशात दरशन करदां हां। मैं नूं तुहाडे विचों वी उस दे दरशन हो रहे ने। मैं निरगुन ब्रहम नूं सरगुन रूप विच उहदी रचना रांही वेखदां हां। उह बेड़ा किरपालू है। उह साडी सुणदा है। उह साडियां अरदासां दा जवाब दिन्दा है। उह हर थां बराजमान है। पूरे ब्रहमंड विच उस तों सुत्री कोयी थां नही। उंनूं तुसी एथे वी महसूस कर सकदे हो ते दूर बिसियर देस ते मक्के मदीने बगदाद विच वी। उह कुझ अजेहा ही मालक है। सच्ची गल है उह नूं ब्यान करनां वी संभव नही। उहदे दरशन सिरफ उहदी रचना विचो ही हन।

साखशात दरशन ओथे होने हन जित्थे बन्दा सच्च विच आ गया है। हां जित्थे उह प्रगत हुन्दा है उहदी निशानी सच्च है। ओथे फिर निरंकार दी उपमा दा प्रवाह चलदा है (साचै सबदि नीसानु) गुरू साहब ते संगत ने रल के सबद गाव्या:-

सोरठि महला 1 ॥ अलख अपार अगंम अगोचर ना तिसु कालु न करमा ॥ जाति अजाति अजोनी संभउ ना तिसु भाउ न भरमा ॥1 ॥ साचे सच्चार विटहु कुरबानु ॥ ना तिसु रूप वरनु नही रेख्या साचै सबदि नीसानु ॥ रहाउ ॥ ना तिसु मात पिता सुत बंधप ना तिसु कामु न नारी ॥ अकुल निरंजन अपर परम्परु सगली जोति तुमारी ॥2 ॥ घट घट अंतरि ब्रहमु लुकायआ घटि घटि जोति सबायी ॥ बजर कपाट मुकते गुरमती निरभै ताडी लायी ॥3 ॥ जंत उपाय कालु सिरि जंता वसगति जुगति सबायी ॥ सतिगुरु सेवि पदारथु पावह छूटह सबदु कमायी ॥4 ॥ सूचै भाडे साचु समावै विरले सूचाचारी ॥ तंतै कउ परम तंतु मिलायआ नानक सरनि तुमारी ॥5 ॥ मुकदी गल कि जेहड़ा बन्दा सच्च दा धारनी हो जांदा है उंनूं घट घट विच निरंकार दे दरशन हुन्दे हन।

—◆—

**भायी लहने ने पुच्छ्या "गुरू जी अमृत वेले ते इना जोर क्यो दिन्दे हो?"**

**जवाब- स्ट्र ओदों मारो जदों लोहा गरम होवे।◆**

ओदों दी गल है जदों गुरू साहब लहौरो वापस करतारपुर आए सन। हाड़ दा महीना सी। रात मसां ढायी पहरां दी हुन्दी है। पहर रात रहन्दी नूं ही गुरू साहब ने भायी लहने नूं जगा ल्या। इशानान कीता। कपड़े पाए ते जपुजी साहब दा पाठ करन उपरंत होर बाणियां पड़हन लग्ग पए।

रोज दी तरां भायी लहने दे मन्न विच बार बार सवाल उठ रहे सन कि की वजा है गुरू साहब मनेरे उठन नूं क्यो ज्यादा तरजीह दिन्दे हन? आखिर जदों गुरू साहब वेहले होए तां भायी लहने ने सवाल कर दिता कि गुरू जी किड्ढा वड्ढा दिन हुन्दा है तुसी मन्हेर सार ही क्यो उठदे ही?

इह सवाल करन ते, गुरू साहब ने भायी लहने नूं शाबाश दिती फिर दुहरायआ कि जो वी मन्न विच गल आए जरूर पुच्छ्या कर।

फिर गुरू साहब ने सारी संगत नूं भरे दीवान विच समझायआ कि मन्हेरे उठना निरंकार दे प्रेमियां लई क्यो जरूरी है?

साहब ने दस्स्या कि मन्हेरे भाव पहर रात रहन्दी जदों असी सुत्ते उठदे हां तां साडे मन दियां तरंगां बड्झियां हुन्दियां हन। दिन वेले साडा ध्यान कई पासे खिल्लरदा है जिस कारन असी निरंकार दी उपमा वल ध्यान नही दे पाउदे। गुरू साहब ने केहा कि बादशाह उह बणदे हन जो ऐन वकत ते जूझदे हन। भाव ओदों स्ट्र मारदे हन जदों लोहा गरम हुन्दे। जे तुसी निरंकार वल ध्यान करनां तां मन्हेर भाव अमृत वेला सभ तों उत्तम।

सुसती लाहुंन लई इशानान जरूरी है अते फिर सिफत सालाह ते इकागर मन जरूरी है।

गुरू साहब ने भरे दीवान विच फिर शबद गाव्या:-

सलोकु म 1 ॥ सबाही सालाह जिनी ध्याया इक मनि ॥ सेयी पूरे साह वखते उपरि लड़ि मुए ॥ दूजै बहुते राह मन किया मती खिंडिया ॥ बहुत पए असगाह गोते खाह न निकलह ॥ तीजै मुही गिराह भुख तिखा दुइ भउकिया ॥ खाधा होइ सुआह भी खाने स्यु दोसती ॥ चउथै आई ऊंघ अखी मोटि पवारि गया ॥ भी उठि रच्योनु वादु सै वर्आ की पिड़ बधी ॥ सभे वेला वखत सभि जे अठी भउ होइ ॥ नानक साहबु मनि वसै सचा नावनु होइ ॥1 ॥

इस मौके फिर भायी लहने ने वी कुझ सतरां कहियां।

मः 2 ॥ सेयी पूरे साह जिनी पूरा पायआ ॥ अठी वेपरवाह रहनि इकतै रंगि ॥ दरसनि रूपि अथाह विरले पाईअह ॥ करमि पूरे पूरा गुरू पूरा जा का बोलु ॥ नानक पूरा जे करे घटै नाही तोलु ॥

जिवे भायी लहने ने इह बानी कही गुरू साहब गद् गद्

हो उठे।

उपरंत गुरू साहब अमृत वेले दे इशानान दी अहमियत ते वख्यान कर रहे सन कि भायी लहने ने इक सलोक होर कह के गुरू साहब नूं प्रसन्न कर दित्ता:

सलोक म 2 ॥ अठी पहरी अठ खंड नावा खंडु सरीरु ॥  
तिसु विचि नउ निधि नामु एकु भालह गुनी गहीरु ॥  
करमवंती सालाहआ नानक करि गुरु पीरु ॥ चउथै  
पहरि सबाह कै सुरत्या उपजै चाउ ॥ तिना दरियावा  
स्यु दोसती मनि मुखि सचा नाउ ॥ ओथै अमृतु वंडीऐ  
करमी होइ पसाउ ॥ कंचन कायआ कसीऐ वंत्री चडै  
चड़ाउ ॥ जे होवै नदरि सराफ की बहुडि न पायी ताउ  
॥ सती पहरी सतु भला बहीऐ पडुया पासि ॥ ओथै पापु  
पुत्रु बीचारीऐ कूडै घटै रासि ॥ ओथै खोटे स्टियह खरै  
कौचह साबासि ॥ बोलनु फादलु नानका दुखु सुखु  
खसमै पासि ॥

सति करतार, सतिनाम, वाहगुरू वाहगुरू दी गूज नाल बेला झूम उठ्या सी।



### जदों करतारपुर दे थड़े ते गवईईआं ने कबज़ा कर ल्या◆

करतारपुर उंज तां हर वेले लोकां दी भीड़ रहन्दी सी पर मस्स्या, पुत्र्या ते संगरांद वाले दिन रौणकां हजारों विच हो जांदियां सन। इक दिन पुत्र्या दे मौके दीवान सज्जे होए सन कि रास धारियां जेहै गवईईआं दा इक जत्था पिच्छों ही गोंद गुन्द के दीवान विच हाजर होया। जथे दे मुखी ने भायी लहने नूं बेनती कीती कि उसनूं वी थड़े (सटेज) ते टाईम दित्ता जावे। भायी लहने ने केहा कि असी इथे सिरफ इक निरंकार रब्ब दी उसतत करदे हां होर गल्लां इथे प्रवान नही हन। पर मुखी ने बहुत ही प्यारी हेक ला के इक दो सतरां जिवे सुणाईआं तां भायी लहने नूं उनां दे जथे नूं कीरतन दी इजाजत दे दित्ती।

रास धारियां ने पहलां तां थोड़ा समां रब्ब दी उसतत विच लायआ ते तुरंत बाद किसे अखौती सूरबीर दी मुकामी वार सुणाउनी शुरू कर दित्ती। उस तों बाद उह सिद्धा ही इशक मशूकी दे किस्से ते आ गए। भायी लहने ने जिवे उनां नूं टोक्या ते थड़े तों थल्ले उतरन दा हुकम कीता तां सरीत्यां विचों कुझ ने भायी साहब नूं टोक दित्ता कि इनां नूं गाउन दित्ता जावे। क्युकि भीड़ विच हर प्रकार दे लोक सन।

भायी साहब ने तुरंत जा गुरू साहब नूं दस्स्या कि थड़े ते गवईईए अजेहे आ बैठे ने उतरन दा नां नही लै रहे ते उह गुरमत दे प्रतीकूल गीत गा रहे ने।

फिर गुरू साहब दीवान दे साहमने मंजा ढाह के बैठ गए। संगत विचों लोकां ने उठ गुरू साहब वल दौड़ना शुरू कर दित्ता कि आपने दुक्ख तकलीफ दा गुरू साहब तों निवारन करवायआ जा सके। क्युकि लोक तां मुढले तौर ते गुरू साहब दे दरशनां लई आए सन। पलां विच दीवान विच हफड़ा दफड़ी मच्च गई। रासधारियां

आपने साज सांभे ते चलदे बणे।

इस ते फिर गुरू साहब ने संगत नूं सम्बोधन कीता कि बीते दियां गल्लां गीतां रांही सुना के गवईईए लोकां नूं झूठ वल प्रेरदे हन। निरंकार दे अभिलाखी गुरमुख प्यार्यो ओनां गीतां कथावां तों दूर रही जिनां करके तुहाडी हऊमे भाव काम, क्रोध, लोभ, मोह, हंकार नूं उतशाह मिलदा होवे। सानूं साध संगत दे चरनां विच रहना हऊगा जे असी आपने दुक्ख दलिद्र कट्टने हन तां। सारी संगत ने साहब दे नाल रल के इह शबद गाव्या।

आसा महला 1 ॥ गावह गीते चीति अनीते ॥ राग सुणाय कहावह बीते ॥ बिनु नावै मनि झूठ अनीते ॥1॥ कहा चलहु मन रहहु घरे ॥ गुरमुखि राम नामि त्रिपतासे खोजत पावहु सहजि हरे ॥1॥ रहाउ ॥ कामु क्रोधु मनि मोहु सरीरा ॥ लबु लोभु अहंकारु सु पीरा ॥ राम नाम बिनु क्यु मनु धीरा ॥2॥ अंतरि नावनु साचु पछानै ॥ अंतर की गति गुरमुखि जानै ॥ साच सबद बिनु महलु न पछानै ॥3॥ निरंकार मह आकारु समावै ॥ अकल कला सचु साचि टिकावै ॥ सो नरु गरभ जोनि नही आवै ॥4॥ जहां नामु मिलै तह जाउ ॥ गुर परसादी करम कमाउ ॥ नामे राता हरि गुन गाउ ॥5॥ गुर सेवा ते आपु पछाता ॥ अमृत नामु वस्या सुखदाता ॥ अनदिनु बानी नामे राता ॥6॥ मेरा प्रभु लाए ता को लागै ॥ हउमे मारे सबदे जागै ॥ ऐथै ओथै सदा सुखु आगै ॥7॥ मनु चंचलु बिधि नाही जानै ॥ मनमुखि मैला सबदु न पछानै ॥ गुरमुखि निरमलु नामु वखानै ॥8॥ हरि जीउ आगै करी अरदासि ॥ साधू जन संगति होइ निवासु ॥ किलविख दुख काटे हरि नामु प्रगासु ॥9॥ करि बीचारु आचारु पराता ॥ सतिगुर बचनी एको जाता ॥ नानक राम नामि मनु राता ॥10॥7॥



### ठरकी बन्दे दी झाड़◆

करतारपुर साहब धरमी बन्दे अकसर प्रवार समेत आ जायआ करदे सन। रोटी पानी भांड्यां दी सेवा विच बीबियां दा वड्डा हिस्सा हुन्दा सी। इक वेरां इक बीबी ने किसे बन्दे दी गलत हरकत दी शकायत आपने पती कोल कीती। घरवाले (पती) ने जदों उस ठरकी बन्दे नूं समझाउना चाहआ तां उह माफी मंगन दे बिजाए झगड़ा करन ते तुल गया।

गल गुरू साहब तक्क पहुंची। गुरू साहब अगगे वी उह बहस करन लग प्या। जानी जान गुरू ने उनुं इशारे नाल केहा बन्द्या तैनुं आपने घर दी कोयी खबर है तूं बिगाने बनेर्या थांनी झातियां मारदा ए इस तों पहलां कि उस दा पाज विच संगत दे खुल्ले उह गुरू साहब दे पैरी पै गया ते अगगे तों अजेहा गुनाह करन दी तोबा कीती।

इस प्रथाय वी गुरू साहब ने फिर शबद रच्या ते सारी संगत नूं नाल लै के उच्ची सुर विच गायआ:

सोरठि महला 1 पंचपदे ॥ अपना घरु मूसत राखि न



साकह की पर घरु जोहन लागा ॥ घरु दरु राखह जेरसु चाखह जो गुरमुखि सेवकू लागा ॥1॥ मन रे समझु कवन मति लागा ॥ नामु विसारि अन रस लोभाने फिरि पछुताह अभागा ॥ रहाउ ॥ आवत कउ हरख जात कउ रोवह इहु दुखु सुखु नाले लागा ॥ आपे दुख सुख भोगि भोगावै गुरमुखि सो अनरागा ॥2॥ हरि रस ऊपरि अवरु क्या कहीऐ जिनि पिया सो त्रिपतागा ॥ मायआ मोहत जिनि इहु रसु खोया जा साकत दुरमति लागा ॥3॥ मन का जीउ पवनपति देही देही मह देउ समागा ॥ जे तू देह त हरि रसु गायी मनु त्रिपतै हरि लिव लागा ॥4॥ साधसंगति मह हरि रसु पाईऐ गुरि मिलिऐ जम भउ भागा ॥ नानक राम नामु जपि गुरमुखि हरि पाए मसतकि भागा ॥5॥10॥

ओथे फिर हर किसे ने मन्न ही मन्न विच कसम खाधी कि आन रस छड्डु के सभ हरि रस दा सवाद चक्खांगे। वाहगुरू साडे सभ ते किरपा करन नाम विच रस आउना शुरू होए ते मन्न लग्गे।

—◆—

### बाबा जी दुख खहड़ा नहीं छड्डु रेहा कोयी उपाय दस्स्यो

करतारपुर विखे जदों गुरू साहब बराजमान सन तां इक बन्दा दीवान विच हाजर हो के गुरू साहब अगो फर्यादी होया। उस ने आपने दुखा दी लमी लड़ी दस्सी। कहन लग्गा गुरू साहब कोयी उपाय दस्सो। ब्राहमन दे दस्से मैं सारे उपाय कर मारे ने, पर दुख मेरा खहड़ा नहीं छड्डुदे।

गुरू साहब ने दीवान विच सारी संगत नूं समझायआ कि जेहड़ा नाम दे लड़ लग्गा जाए उहदे दुख दलिद्र कट्टे जांदे ने। नाल ही उनां समझायआ कि असी आपनी किसमत धुरों ही लिखवा के आउदे हां। दुख तकलीफां जां सुख साडे जीवन विच आउने ही आउने ने। पर जे तुसी नाम दे लड़ह लग्गोगे तां तुहानूं दुख पोहेगा ही नहीं। दुनियां दी नजर विच तुसी दुख पा रहे होवोगे पर तुहाडी अंतर आतमा चड़हदी कल्हा विच होवेगी। क्युकि दुख सुख इक तरां नाल मन दी अवसथा हुन्दे हन। जदों तुसी घट घट निरंकार दी जोत वेखोगे तां दुख दी थां तुहानूं अनन्द दा आभास होवेगा। गुरबानी जां नाम दे लड़ह लग्गां तुहानूं चड़हदी कल्हा वाली अवसथा हासल होवेगी।

अंत विच गुरू साहब ने फिर उह शबद संगत विच गायआ जेहड़ा उनां ने मथरा दे ब्राहमणां नूं सुणायआ सी। :

सोरठि महला 1 ॥ सरब जिया सिरि लेखु धुराह बिनु लेखे नहीं कोयी जीउ ॥ आपि अलेखु कुदरति करि देखे हुकमि चलाए सोयी जीउ ॥1॥ मन रे राम जपहु सुख होयी ॥ अहनिंसी गुर के चरन सरेवहु हरि दाता भुगता सोयी ॥ रहाउ ॥ जो अंतरि सो बाहरि देखहु अवरु न दूजा कोयी जीउ ॥ गुरमुखि एक द्रिसटि करि देखहु

घटि घटि जोति समोयी जीउ ॥2॥ चलतौ ठाकि रखहु घरि अपनै गुर मिलिऐ इह मति होयी जीउ ॥ देखि अद्रिसटु रहउ बिसमादी दुखु बिसरै सुखु होयी जीउ ॥3॥ पीवहु अप्यु परम सुखु पाईऐ निज घरि वासा होयी जीउ ॥ जनम मरन भव भजनु गाईऐ पुनरपि जनमु न होयी जीउ ॥4॥ ततु निरंजनु जोति सबायी सोहं भेदु न कोयी जीउ ॥ अपरम्पर पारब्रहमु परमेसरु नानक गुरु मिल्या सोयी जीउ ॥5॥11॥

—◆—

### जदों ठग करतारपुर आ उतरे

उतर प्रदेश इलाके दी ठग्गी इतहास विच मशहूर गिनी गई है। मुगल हकूमत वेले इह जोरां ते सी अंगरेजां दे राज तक्क इह प्रचलत रही है। अंगरेजां ने बड़ी सखती नाल ठग्गी दा धंधा बन्द करवायआ सी। इह जुंडलियां दियां जुंडलियां बना के बनारस आदि इलाके तों निकलदे ते सारे हिन्दुसतान विच वक्ख वक्ख रूप बना के फिरदे ते जुरम करदे सन। ठग्गी नूं अंजाम देन वासते इह अकसर बन्दे नूं धतूरे नाल बेहोश करदे ते जरूरत पैन दे कतल वी कर द्या करदे सन।

शरधालूआं दे संग दे नाल नाल पुच्छदी पुच्छांदी अजेहे ही बनारसी ठग्गां दी इक जुंडली करतारपुर वी आ गई। अमूमन इह वणजार्यां दे रूप विच फिरदे हुन्दे सन, पर अज्ज इह साधू महातमा बने होए सन। मथे ते लाल टिकके लाए होए, गलां विच तुलसी दियां मालां, हथां विच सिमरनियां, तेडी धोतियां पाईआं, महीन मल-मल दे कमीज (चउपोतियां), मोढ्यां ते सफेद चादरे सुट्टे होए, कच्छां हेठ लैन लई अंगरेजी दे अक्खर टी वरगो आसन, हथां विच लाठियां (लसटिकां)।

जदों सेवादार उहनां दी जान पछान बाबत कोयी अजेहा सवाल करन जिस तों उनां दी असलियत नंगी होनी होवे तां जवाब विच बस 'राम' 'राम' कही जान। उंज साधूआं वाली बोली बोलण।

भायी लहने ने गुरू साहब नूं जा दस्स्या कि कुझ इस प्रकार दे वैशना भगत आए ने। गुरू साहब ने सारा हिन्दुसतान गाहआ होया सी उनां नूं सुणदे सार शक्क प्या ते उनां भायी लहने हुणां नूं सुचेत कर दित्ता। गुरू साहब फिर आप उनां नूं मिलन गए। गल बात शुरू होयी तां गुरू साहब ने वाकफियत पुच्छी तां उह थिड़क गए। उह गुरू साहब दियां सिफतां करी जान। जेहड़े संग नाल आए सन गुरू साहब ने ओनां कोलो पुच्छ्या कि तुसी इस टोली नूं जाणदे हो। सिक्खां ने साफ इनकार कर दित्ता कि इह साडे कोलों पुच्छ रहे सन कि कित्थे जा रहे हो असी जदों दस्स्या तां इह साडे नाल हो तुरे।

गुरू साहब ने भायी लहने हुरां नूं हुकम कर दित्ता कि इनां नूं कुझ नहीं कहणा। लंगर पानी छकायो। रात सौन वी देणा।

दीवान विच फिर गुरू साहब ने ओनां नूं सम्बोधन हो के

जदों शबद बोल्या तां ओनां दियां अक्खां खुल्ल गईआं कि अज्ज तां बुरे फसे। गुरू साहब नाल पूरी संगत इह शबद बोल रही सी। :-

धनासरी महला 1 ॥ चोरु सलाहे चीतु न भीजै ॥ जे बदी करे ता तसून छीजै ॥ चोर की हामा भरे न कोइ ॥ चोरु किया चंगा क्यु होइ ॥1॥ सुनि मन अंधे कुते कूड़्यार ॥ बिनु बोले बूझीए सच्यार ॥1॥ रहाउ ॥ चोरु सुआल्यु चोरु स्थाना ॥ खोटे का मुलु एक दुगाना ॥ जे साथि रखीए दीजे रलाय ॥ जा परखीए खोटा होइ जाय ॥2॥ जैसा करे सु तैसा पावै ॥ आपि बीजि आपे ही खावै ॥ जे वड्याईआ आपे खाय ॥ जेही सुरति तेहै राह जाय ॥3॥ जे सउ कूडिया कूडु कबाडु ॥ भावै सभु आखउ संसारु ॥ तुधु भावै अधी परवानु ॥ नानक जानै जानु सुजानु ॥4॥4॥6॥

ठग्गां वासते उथे बैठना मुशकल हो रेहा सी। हर किसे नूं पता चल चुक्का सी कि इह चोर-उचक्के-डाकू ने। संगत दी गिणती वी चोखी सी।

आखिर चोरां ने आपे दुहायी दे दिती कि बाबा जी असी ठग्गा हां। सानूं माफ कर द्यो। ओनां केहा जी अग्गे तों इह धंधा छड्डे हां। गुरू साहब ने केहा कि माफी काहदी तुसां केहड़ा इस कंम तों हट्ट जाना है। तुसी रात गुजारो ते बस्स चलदे बणो।

ओनां बार बार इस कंम तों तोबा कीती ते बेनती कीती कि साडे ते वी किरपा करो ते नाम दी दात बखशो। सानूं वी बाकियां वागू आपने चरनां नाल लायो। तरस करो।

संगत समझदी सी कि सवेर हुन्दां चले जाणगे पर उह सिक्खी द्रिड़ करन लई ओथे ही ठहर गए। हौली हौली इक इक दो दो करके चले गए।

केहा जांदा है कि उहनां सच्च मुच्च सिक्खी धारन कर लई।



### \*\*तीरथ यातरा करन नाल मुकती नही मिलदी

गंगा जा रेहा जदों हजारां यातरूआं दा संग करतारपुर आ रुक्या, "बाबा जी साडे नाल चलो"

जेठ महीने दे आखरी दिन सन। हिन्दू जंतरी मुताबिक जेठ सुदी दसवी नूं हरदुआर गंगा विखे बड़ा भारी मेला 'गंगा दुसेहरा' लग्ग रेहा सी क्युकि ऐतकां दुसेहरा बुधवार नूं पै रेहा सी। बुधवार दे दुसहरे दा ब्रहामणां अनुसार वड्डा महातम हुन्दा है। अखे इस दिन पुत्र दान ते इसनान कीत्यां 10 जनमां दे पाप लह जांदे ने।

स्यालकोट दे पहाड पासे दे पिंडां दा इक वड्डा संग तुर्या जिस विच हजारां जिय सन। हर किसम दा आवाजायी दे साधन नाल सन। घोड़े, खोते, टांगे, पशू गड्डे आदि ते समान ते बजुरग सवार सन। सिरफ एनां ही नही वजंतरियां समेत नाल भजन मंडलियां वी सन।

इस संग ने तह कीता सी कि दूसरी रात नारोवाल दे लागे बाबे नानक दी धरमसाला विच रहना है। इनां नूं बाबे

बारे पूरी जाणकारी सी कि करतारपुर रहन ते लंगर पानी दा पूरा इंतजाम है।

इहनां दे आगूआं ने सोच्या कि बाबे नानक नूं नाल ही लै चलांगे।

लौढे वेले ही संग करतारपुर पहुंच गया। थोड़ा पानी धानी पी के कुझ चिर अराम करन उपरंत संगियां ने दीवान ला ल्या। जवान मुंडे खुंडे कीरतनीए सन। बडे जोशो खरोश नाल उह पए भेटां गावन ते मायी गंगा दी उपमा दे गीत गाउण।

गुरू साहब वासते तां इह सुनेहरी मौका सी। तीरथ यातरा दे खंडन बारे तां उह अनेकां थावां ते वख्यान दे चुक्के सन। गुरू साहब ने वी इस दीवान विच वारी लै लई।

सभ तों पहलां गुरू साहब ने संगियां नूं लक्ख लक्ख प्रणाम कीता जित्रां दे मन्न विच शुध भावना सी ते जो कल्यान खातर गंगा जा रहे सन।

उपरंत वजंतरियां समेत गुरू साहब ने शबद गायआ जिस विच सिक्ख संगत दी वी शमूलियत सी:-

धनासरी महला 1 छंत आं सतिगुर प्रसादि ॥

तीरथि नावन जाउ तीरथु नामु है ॥ तीरथु सबद बीचारु अंतरि ग्यानु है ॥ गुर ग्यानु साचा थानु तीरथु दस पुरब सदा दसाहरा ॥ हउ नामु हरि का सदा जाचउ देहु प्रभ धरणीधरा ॥ संसारु रोगी नामु दारू मैलु लागै सच बिना ॥ गुर वाकू निरमलु सदा चाननु नित साचु तीरथु मजना ॥1॥ साचि न लागै मैलु क्या मलु धीईए ॥ गुनह हारु परोइ किस कउ रोईए ॥ वीचारि मारै तरे तारे उलटि जोनि न आवए ॥ आपि पारसु परम ध्यानी साचु साचे भावए ॥ आनन्दु अनदिनु हरखु साचा दूख किलविख परहरे ॥ सचु नामु पायआ गुरि दिखायआ मैलु नाही सच मने ॥2॥ संगति मीत मिलापु पूरा नावनो ॥ गावे गावणहारु सबदि सुहावनो ॥ सालाह साचे मन्नि सतिगुरु पुत्र दान दया मते ॥ पिर संगि भावै सहजि नावै बेनी त संगमु सत सते ॥ आराधि एकंकारु साचा नित देइ चडै सवायआ ॥ गति संगि मीता संतसंगति करि नदरि मैलि मिलायआ ॥3॥ कहनु कहै सभु कोइ केवडु आखीए ॥ हउ मूरखु नीचु अजानु समझा साखीए ॥ सचु गुर की साखी अमृत भाखी तितु मनु मान्या मेरा ॥ कूचु करह आवह बिखु लादे सबदि सचै गुरु मेरा ॥ आखनि तोटि न भगति भडारी भरिपुरि रहआ सोयी ॥ नानक साचु कहै बेनती मनु मांजै सचु सोयी ॥4॥1॥

भाव पहला इक ओकार दा सिधांत दस्स्या ते फिर नाम दा सिधांत दस्स के संग नूं जानु करवायआ कि बेशक्क सैर सपाटा कर आयो। उज गंगा नाउन नाल पाप नही मिट्टे। पाप मिट्टे दे सिरफ राम नाम नाल।

गुरू साहब दे इस वख्यान ते कीरतन नाल जादू वरगा असर प्या। उह सारे लोक जो सिरफ कल्यान वासते गंगा जा रहे सन ओनां ने अग्गे जान तों नांह कर दिती। गुरू साहब ने ओनां नूं समझायआ कि हुन तुसी घरों

गंगा जाना सोच के आए हो हुन तुसी सारे गंगा जायो। फिर कुझ लोक करतारपुरों परत गए ते बाकी दा संग गंगा गया। लिखारियां लिख्या है कि ओदों फिर संगी दो नाहरे मार रहे सन।

जै गंगा माता दी। जै बाबे नानक दी।

अजेहे ही किसे होर मौके ते गुरू साहब ने हेठ शशोभित शबद रच्या\*\*:

कलर केरी छपड़ी कऊआ मलि मलि नाय ॥ मनु तनु मैला अवगुनी चिंजु भरी गंधी आइ ॥ सरवरु हांसि न जाण्या काग कुपंखी संगि ॥ साकत स्यु ऐसी प्रीति है बूझहु ग्यानी रंगि ॥ संत सभा जैकारु करि गुरमुखि करम कमाउ ॥ निरमलु नावनु नानका गुरु तीरथु दरियाउ ॥10

—◆—

### मैं मिलावटी चीज़ क्यो लवां?◆◆

करतारपुर बाबा रह रेहा सी। इलाके विच बाबे दे कौतकां बाबत बहुत गोगा उठ्या सी। हर पासे बाबा नानक, बाबा नानक हो रेहा सी। इक दिन इलाके दे कुझ मोहतबर बन्दे करतारपुर आ गए। पुच्छन लग्गे कि बाबा तूं केहड़े फिरके नाल सबंध रखदे? नां तूं मुसलमान लग्गदे नां तूं हिन्दू, नां जोगी नां सन्न्यासी। बाबा इक पासे हो जा भावे जेहड़े मरजी फिरके नाल हो।

गुरू साहब ने केहा तुसी आपे दस्स रहे सी कि काजी जिस ने इनसाफ देना हुन्दा है उह वी झूठ बोल जांदा है। दूसरे पासे ब्राहमणां नूं वेख लओ बड़े नहाउदे धींदे हन ते धरम दे नां ते जिय हत्या कराउदे नै कि जी बली दे रहे हां। तीजा जोगियां दा वी तुसी जाणदे हो कमले होए फिरदे ने।

तुसी जाणदे हो खोटा सिक्का किसे कंम दा नही हुन्दा ते जे ओहो चांदी होवे तां तुसी खरा खरा के उनूं लैन दौडदे हो। सो मैनु क्यो कहन्दे हो कि खोटा बण जा। जदो कि सानूं सभ नूं पता है कि रब्ब दी कचेहरी विच साडे कंमां दा लेखा जोखा होना है। इस कागज रूपी सरीर ते जेहड़े लेख असी लिख रहे हां इह छुपे नही रहणे।

इस उपरंत गुरू साहब ने धनासरी विच शबद गाव्या। सारी संगत ने नाल साथ दिता:-

धनासरी महला 1 ॥ कायआ कागदु मनु परवाना ॥ सिर के लेख न पडै याना ॥ दरगह घडियह तीने लेख ॥ खोटा कामि न आवै वेखु ॥1 ॥ नानक जे विचि रुपा होइ ॥ खरा खरा आखै सभु कोइ ॥1 ॥ रहाउ ॥ कादी कूड बोलि मलु खाय ॥ ब्राहमनु नावै जिया घाय ॥ जोगी जुगति न जानै अंधु ॥ तीने ओजाड़े का बंधु ॥2 ॥ सो जोगी जो जुगति पछानै ॥ गुर परसादी एको जानै ॥ काजी सो जो उलटी करै ॥ गुर परसादी जीवतु मरै ॥ सो ब्राहमनु जो ब्रहमु बीचारै ॥ आपि तरै सगले कुल तारै ॥3 ॥ दानसबन्दु सोयी दिलि धोवै ॥ मुसलमानु सोयी मलु खोवै ॥ पड्या बूझै सो परवानु ॥ जिसु सिरि दरगह

का नीसानु ॥4 ॥5 ॥7 ॥

—◆—

### असली गुरू दी पछाण?

जेहड़ा तुहानूं सच्च दे दरशन करा देवे। मौत दा अहसास करवा दए।◆◆

करतारपुर विखे दीवान लग्गा होया सी कि इक जग्यासू उठ्या ते गुरू साहब अग्गे बेनती करन लग्गा कि गुरू जी तुसी सतिगुरू जां गुरू दी अहमियत ते बहुत जोर दिन्दे हो, कि गुरू दे दर ते गया मुकती हो जांदी है। पर बाबा जी गुरू तां हर किसे दा हैगा। जोगियां दे वी उसताद जां गुरू हुन्दे हन। ब्रहमचारियां दे वी, फकीरां दे वी, ब्राहमणां दे वी, मतलब जिस जिस वी भेख साधू हैगे ने हर थां गुरू तां है ही। होर ते होर भलवानां दे वी गुरू हुन्दे ने। विद्यारथियां दे वी गुरू हुन्दे ने। होर ते होर चौरां ठग्गां दे वी अग्गों गुरू हुन्दे ने।

फिर बाबा जी तुसी केहड़े गुरू दी गल करदे हो जिसदे दर ते गया बन्दा मुकत हो जांदा है?

गुरू साहब ने समझायआ कि सच्चा गुरू जां सतिगुरू तुहाडे अग्गों झूठ दा पड़दा हटा दिन्दा है। तुहानूं तुहाडी मौत दा अहसास दुआ दिन्दा है। दुन्यावी उसताद तुहानूं सिख्या दिन्दे वकत आपना मायक फायदा वेखदा है। उह तुहानूं कदी खुश वी करदा है तां कि तुसी उस नाल जुड़े रहो। सतिगुरू तुहाडे हऊमे ते चोट करदा है। सतिगुरू दे दर ते गया तुहाडी दुबिधा मुक्क जांदी है।

सारी संगत ने गुरू साहब दे नाल इह सबद गायआ:-

गउड़ी महला 1 ॥ सतिगुरु मिलै सु मरनु दिखाए ॥ मरन रहन रसु अंतरि भाए ॥ गरबु निवारि गगन पुरु पाए ॥1 ॥ मरनु लिखाय आए नही रहना ॥ हरि जापि जापि रहनु हरि सरना ॥1 ॥ रहाउ ॥ सतिगुरु मिलै त दुबिधा भागै ॥ कमलु बिगासि मनु हरि प्रभ लागै ॥ जीवतु मरै महा रसु आगै ॥2 ॥ सतिगुरि मिलिए सच संजमि सूचा ॥ गुर की पउड़ी ऊचो ऊचा ॥ करमि मिलै जम का भउ मूचा ॥3 ॥ गुरि मिलिए मिलि अंकि समायआ ॥ करि किरपा घरु महलु दिखायआ ॥ नानक हउमै मारि मिलायआ ॥4 ॥9 ॥

—◆—

सोदी 2-370, ◆सोदी 2-372, ्वसोदी 2-375 पक्खोके अजिते रंधावे वाली गोशट वी देखो, सोदी 2-388 सोदी 2-395, सोदी 2-391, सोदी 2-398, य सोदी 2-401, ◆सोदी 2-403, \*\*सोदी 2-406 भविख दे खोजियां लई- जेठ सुदी 10वी केहड़े साल विच बुधवारा आई इस तों सानूं साल दा वी पता लग्ग सकदा है। सानूं खुद छ तां 1530 दे आस पास दा कैलंडर (पाचांग) नही मिल पायआ। ◆◆सोदी 2-411, ◆◆सोदी 2-415

## जदों साधूआं पुच्छ्या गुरू जी असी सुणिए तुसी मुकती दे सिधांत नूं नही मन्नदे?

### 'सिक्खी दा निशाना : जींदे जी मुकती'

इक वेर करतारपुर साहब विखे साधूआं दा टोला आया। बहुत ग्यानवान सन। उनां सुण्यां सी कि गुरू नानक मुकती दा नवां ही रसता दस्स रेहा है। उनां आ के सवाल कीता कि गुरू जी शासतरां अनुसार बन्दा सतो-गुन तां ही हासल करेगा जे उह दस्से मारग ते चले (त्रैगुन सिधांत) भाव पुन दान, तीरथ यातरावां करे, करम कांड (पूजा आदि) करे नही तां जीव उ तमो सोच जां (अ) रजो सोच विच ही जीवन बरबाद कर देवेगा। (शासतरां अनुसार बन्दा तिन्र हालतां विच जींदा है: 1. रजो, 2. तमो अते 3. सत्तो अवसथा।। पहली अवसथा तमो हुन्दी है जिस विच हऊमैधारी बन्दे दी सोच द्या वेहणी, पशु वरगी हुन्दी है ते उह दूसर्यां ते जुलम करदा है, चोरी करदा, कतल करदा आदि। पर ज्यादातर समाज विच दूजी अवसथा भाव रजो सोच भारू हुन्दी है जिस करके बन्दा मायक पदारथ हासल करन वासते जदोजहद विच लग्गा रहन्दा। उहदी सोच हुन्दी है कि मायआ करके समाज विच उच्ची पदवी मिलदी है। जां उह उच्च पदवी हासल करन वासते संघरश करदा है। उहदा मन्न तड़फ रेहा हुन्दा है। उह कदी कुझ करदा, कदी कुझ करदा। अते तीसरी सच्च वाली सतो अवसथा गिनी गई है जिस तहत उह मौत तों बाद वाला आपना जीवन संवारदा है।)

"बाबा जी असी सुणिए तुसी शासतरां तों वखरा ही मुकती दा राह दस्सदे ही उह केहड़ा है?" साधूआं पुच्छ्या।

गुरू साहब ने केहा हां इह सच्ची गल है असी मौत तों बाद दे जीवन बारे चिंता नही करदे। नां ही उनूं संवारन वासते पुत्र दान, करम कांड जां तीरथ यातरा दी सलाह दिन्दे हां।

साडा निशाना है बन्दे दे अज्ज भाव वरतमान नूं संवारनां। असी बन्दे नूं कुदरत दे खेल बारे दस्सदे हां कि काम, क्रोध, लोभ, मोह अहंकार रांही किवे अकाल पुरख ने इक जंजाल जेहा रच्या है जिस विच बन्दा सारी उमर तड़फदा रहन्दा है। गुरमत बन्दे नूं हऊमे दी असलियत तों जानू करवा दिन्दी है। मिसाल दे तौर ते जिवे काम वाली गल ही लै लयो। असी दसदे हां कि काम क्यो उपजदा है? मतलब काम पैदा होवेगा तां ही अग्गे पैदावार होवेगी। जीव दी अगली पीड़ी चलेगी तां ही सदीवी खेल चलेगा। पर ग्यान वेहना बन्दा काम विचों अनन्द लभन दी दौड़ विच पैजांदा है। एसे तरां जे मोह होवेगा तां ही जीव आपना बच्चा पालेगा। जे बच्चे दी पालना पोसना नां होयी तां वी खेल असफल (डरामा फेल) हो जांदा है। एसे तरां लोभ मोह अहंकार पिच्छे वी अकाल पुरख दी गहरी चाल है। असी हऊमे ते सच्च बारे ग्यान करवा दिन्दे हां।

कहन तों मतलब असी मनुक्ख नूं ग्यान रांही उच्चा चुक्कन दा उपराला करदे हां। जदों उनूं सच्च दा ग्यान हो जादा है तां उहदा मौत दा भैय मुक्क जांदा है। गुरबानी नितनेम रांही असी रोज उनूं सच्च दा अहसास दुआउदे हां। बन्दा फिर चडहदी कल्हा च अनन्द विच जीउदा है। उनूं फिकर नही हुन्दा कि मरन तों मगरों मेरे नाल की होना है। भविख वासते उहदी चिंता नही रहन्दी। उनूं पता लग्ग जांदा है कि जो कुझ हो रेहा है, करते दे हुकम तहत चल रेहा है। उनूं बीते दा पछतावा नही हुन्दा ते भविख दा फिकर नही। उहनूं रजा दे सिधांत दी समझ आ चुक्की हुन्दी है। सो गुरसिख ने ग्यान च जीना है।

गुरू जी ने महातमा लोकां नूं दस्स्या कि असी रजो, तमो, सतो अवसथा तों वक्खरी गल करदे हां। तुसी कह लओ तुरियवसथा जां ग्यान अवसथा। असी इस नूं चडहदी कला वाला जीवन कहन्दे हां। (नानक नाम चडदी कल्हा॥ तेरे भाने सरबत दा भला॥) असी मौत तों बाद वाले जीवन नूं संवारन ते जोर नही दिन्दे। साडे वासते मौजूदा जीवन अहम है। असी गुरसिक्ख नूं वरतमान विच जीन दा दस्सदे हां।

उह साधू जित्रां सारी उमर सच्च दी खोज विच ला दिती होयी सी, धन्न धन्न कर उठे। हर पासे धन्न गुरू नानक, धन्न बाबा नानक हो रेहा सी।

चार पदारथ- एसे तरां हिन्दू शासतरां ने मन्त्रा है कि मनुक्ख आपनी मानसिक अवसथा मुताबिक चार किसम दे खजाने जोड़न विच लग्गा रहन्दा है:

धरम - उह कम जिस विच इसनूं सिद्धा मायआ दा लाभ नां होवे।

अरथ- मायआ सबंधी।

काम - मन्न 'चों उठदियां तरंगं दी पूरती। जिवे काम, क्रोध, लोभ, मोह दे कंमां विच पैणा। प्रवार खड़ा करनां वी एसे श्रेनी विच आउदा है।

मोख- मुकती दी प्रापती लई यतन करने। मतलब आपनी मौत तों बाद वाली अवसथा विच सानूं सहूलत होवे। (हालां मौत तों बाद की हुन्दा है किस ने वेख्या है।)

जिवे गुरू साहब ने जीवन मुकती दा सिधांत भरे दीवान विच समझायआ तां साधू लोक तां धन्न गुरू नानक, धन्न बाबा नानक पुकारन लग्ग पए। "बाबा जी साडा जीवन सफल कर दिता तुसी। हुन तों असी तुहाडे।"

रावी दा बेला उस वेले फिर रंग विच आ ग्या, जदों सारी संगत ने रल के गुरू साहब दे मगर इह शब्द गाव्या:-\*

गउड़ी महला 1 ॥ जनमि मरै त्रै गुन हितकारु ॥ चारे बेद कथह आकारु ॥ तीनि अवसथा कहह वख्यानु ॥ तुरियावसथा सतिगुर ते हरि जानु ॥1॥ राम भगति गुर सेवा तरना ॥ बाहुडि जनमुन होइ है मरना ॥1॥ रहाउ ॥ चारि पदारथ कहै सभु कोयी ॥ सिंमृति सासत पंडित मुखि सोयी ॥ बिनु गुर अरथु बीचारु न पायआ ॥

मुकति पदारथु भगति हरि पायआ ॥2॥ जा के हिरदै  
वस्या हरि सोयी ॥ गुरमुखि भगति परापति होयी ॥ हरि  
की भगति मुकति आनन्दु ॥ गुरमति पाए परमानन्दु  
॥3॥ जिनि पायआ गुरि देखि दिखायआ ॥ आसा माह  
निरासु बुझायआ ॥ दीना नाथु सरब सुखदाता ॥ नानक  
हरि चरनी मनु राता ॥4॥12॥

—◆—

### जदों सिक्ख गुरू साहब लई जोड़ा कपड़े लै के आया◆

इक वेरां जदों गुरू साहब करतारपुर विखे बिराजे होए  
सन तां इक सिक्ख गुरू साहब लई काले रंग दे बहुत ही  
महीन महीन कपड़यां दे जोड़े सिवां के ल्याया। नाल ही  
इतर फुलेल दियां शीशियां, मिठाईआं दे कुज्जे अते  
सुकके मेव्यां दी टोकरी ल्या गुरू साहब दे अरपन  
कीती। बहुत ही अधीनगी नाल बेनती कीती कि गुरू  
साहब मैनु बहुत चाय आ जे तुसी मेरा भेट कीता जोड़ा  
पहनो तां। माता सुलक्खनी ने वी जोर पा दित्ता कि  
साहब तुसी इह जोड़ा जरूर पहनो।

अखीर गुरू साहब ने जोड़ा पहन ल्या ते बाकी वसतुआं  
भंडारी दे हवाले कर दित्तियां। ओथे हर किसै ने  
सलाहआ कि गुरू साहब नवे कपड़यां विच तुसी बहुत  
चंगे लग्ग रहे हो।

अज्ज फिर दीवान विच गुरू साहब ने कायआं भाव  
सरीर दी असलियत ते ही शबद बोल दित्ता।

गउड़ी चेती महला 1 ॥ अमृत कायआ रहै सुखाली  
बाजी इहु संसारो ॥ लबु लोभु मुचु कुडु कमावह बहुत  
उठावह भारो ॥ तूं कायआ मै रलदी देखी (पूरा शबद  
देखो सफा णणणनन लंका साखी)

हे मेरे सरीर! आपने आपळ अमर जान के सुख मानन  
विच ही लग्गा रहन्दा है, तैनुं इह अहसास नहीं कि इह  
जगत इक खेड है। हे मेरी जिन्दे! मेरी सिक्ख्या ध्यान  
नाल सुन। सभ कहन लग्ग पए धत्र है बाबा नानक  
जिस ने साडियां अक्खां खोल दित्तियां। इह तां वड्डी  
सचायी है कि इह सरीर इक दिन सुआह हो जाना है।

कायआं ते वख्यान अगले दिन वी जारी रेहा\*\*

फिर अगले दिन वी गुरू साहब ने हऊमे विच जकड़ी  
इस कायआ ते वख्यान जारी रक्ख्या ते समझायआ कि  
किवे इह सरीर काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार दे  
चक्कर विच पै के लुटीदा रहदा है। जीव भुल्या प्या कि  
इक दिन इस माडी नूं अगल्यां ढाह देना "ढाह मडोली  
लूट्या देहरा सा धन पकड़ी एक जना ॥" मतलब कि  
बन्दा मायआ मोह विच ऐना नां डुब्बा रहु।

साहब ने शबद केहा जिस नूं सारी संगत ने नाल रल  
गायआ:-

गउड़ी चेती महला 1 ॥ अवरि पंच हम एक जना क्यु  
राखउ घर बारु मना ॥ मारह लूटह नीत नीत किसु आगै  
करी पुकार जना ॥1॥ श्री राम नामा उचरु मना ॥ आगै

जम दलु बिखमु घना ॥1॥ रहाउ ॥ उसारि मडोली राखै  
दुआरा भीतरि बैठी सा धना ॥ अमृत केल करे नित  
कामनि अवरि लुटेनि सु पंच जना ॥2॥ ढाह मडोली  
लूट्या देहरा सा धन पकड़ी एक जना ॥ जम डंडा गलि  
संगलु पड़्या भागि गए से पंच जना ॥3॥ कामनि लोडै  
सुइना रुपा मित्र लुडेनि सु खाधाता ॥ नानक पाप करे  
तिन कारनि जासी जमपुरि बाधाता ॥4॥2॥14॥

—◆—

### भायी लहना पुच्छदै, "गुरू जी बन्दे दे दुक्खां दा की कारण?" ्व

क्युकि गुरू साहब ने भायी लहने नूं बार बार ताकीद  
कीती होयी सी कि जो वी तेरे मत्र विच सवाल उठदै  
बिनां झिज्जक पुच्छ्या कर। भायी लहने ने फिर दीवान  
विच वी सवाल पुच्छणे। इक दिन फिर स्यालकोट तों  
इक खत्तरी आया। रो रो के आपने दुक्खड़े गुरू साहब  
अगो फोल रेहा सी कि 'मै समाज विच कक्खों हउला हो  
गया वां। मेरा सारा कारोबार बरबाद हो गया है। बाबा  
जी मेरा तां जिय करदा खुदकशी कर लवां।'

गुरू साहब ने उस सौदागर नूं उपदेश दित्ता कि नाम दे  
लड़ लग्गो, सच्च विच आ जायो तुहाडिया तकलीफां  
कट जाणगियां।

सौदागर ने आपने कुझ अजेहे दुक्खड़े रोए कि भायी  
लहने दी उस नाल हमदरदी हो गई। भायी साहब ने  
फिर सवाल कर दित्ता कि गुरू जी साडा मालक  
अकाल पुरख जीवां नूं एने दुक्ख क्यो दिन्दा है?

गुरू साहब ने फिर विसथार नाल समझायआ कि असी  
आपना बीज्या आपे वड्ठे हां। गुरू साहब ने उस  
सौदागर नूं केहा कि तेरे ते कर्दा तों दुक्खां ने घेरा  
पायआ होया है। उस दस्स्या कि बाबा जी कुडुडी दा  
व्याह कीता सी उस तों बाद कारोबार हेठां ही हेठां चला  
गया।

गुरू साहब ने भायी लहने नूं सम्बोधन हो के केहा कि  
पुरखा इह गवाह तेरे साहमने है। बन्दा जदों हऊमे विच  
आ के आपना टौहर बणाउन खातर अजेहे कम करदा  
है तां फिर उनूं नतीजे वी भुगतने पैदे हन। इस बन्दे ने धी  
दे व्याह ते वितों बाहरा खरचा कीता। आपनी रास-पूजी  
लाउनी तां किते, इस ने करजा वी चुक्क ल्या। पर  
कारोबार विच आमदन मर्यादा अनुसार आउदी है। इस  
ने वित्त दा सावांपन सारा विगाड़ दित्ता। फिर घाटे तां  
पैने ही सन। खरचा करन लग्ग्या इस ने आपनी आमदन  
नही वेखी।

सौदागर कहन लग्गा जी कुडुम ज्यादा अमीर बन्दे सी।

गुरू साहब ने फिर व्याख्या कीती कि वेखो इथे फिर  
इहदी हऊमै अगो आई। इस ने आपने दायरे विचों  
बाहर जा के रिसता कीता। आपने आप नूं अमीर होन  
दा विखावा कीते ते जलौय कीते। भाव आपने आप नाल  
ते समाज नाल वड्ठा झूठ बोल्या।

सो इह सुदागर रजा विच नही सी चल्या। रजा तों बाहरा हो गया। इस ने सिरफ आपने वासते ही मुशकलां नही पैदा कीतियां इस दे कारनामे करके धी वी दुक्खी है।

मुक्कदी गल बन्दे दे दुक्खां दी जड़ह उहदी हऊमै ही है। किते उह काम दी वज्हा करके दुक्ख पा रेहा हुन्दे, किते हंकार दे करके, किते मोह करके, कदी क्रोध करके। भाव बन्दा जे सच्च भाव रजा विच चलेगा तां उह नू दुक्ख दलिद्र नही घेरनगे। 'सचु सभना होइ दारू पाप कढे धोइ ॥'

फिर गुरू साहब ने चेती गउड़ी विच बानी गाई:-

गउड़ी चेती महला 1 ॥ अउखध मंत्र मूलु मन एकै जे करि द्रिडु चितु कीजै रे ॥ जनम जनम के पाप करम के काटनहारो लीजै रे ॥1 ॥ मन एको साहबु भायी रे ॥ तेरे तीनि गुना संसारि समावह अलखु न लखना जायी रे ॥1 ॥ रहाउ ॥ सकर खंडु मायआ तनि मीठी हम तउ पंड उचायी रे ॥ राति अनेरी सूझसि नाही लजु टूकसि मूसा भायी रे ॥2 ॥ मनमुखि करह तेता दुखु लागै गुरमुखि मिलै वडायी रे ॥ जो तिनि किया सोयी होआ किरतु न मेत्या जायी रे ॥3 ॥ सुभर भरे न होवह ऊने जो राते रंगु लायी रे ॥ तिन की पंक होवै जे नानकु तउ मूड़ा किछु पायी रे ॥4 ॥4 ॥16

दीवान विच बैठे हर किसे दिया अक्खां खुल्ल गईआं सन। मन ही मन विच हर कोयी सोच रेहा सी कि अगे तों हलीमी विच रहना है। गरीबी चंगी है। नकली अमीर बणना बहुत महंगा पैदा है।

गुरू साहब दा उपदेश सुणके उस वपारी दा हिरदा खिड़ उठ्या। कहन्दा मैं कल ही जा के उह सारी जायदाद वेच के सुरखरू होवांगा जेहड़े विखावे खातर बणायी होयी है।

आप मुहारे लोकां दे मूंहो निकल रेहा सी: धन्न गुरू नानक। रब्ब दा रूप बाबा नानक।



### हंकार तां नेकी दा वी प्रवान नही◆

गल करतारपुर साहब धरमसाल दी है। गुरू साहब ने वेख्या कि कुझ गुरसिक्ख जो धरमसाल विच रह के सेवा कर रहे सन संगत नाल उनां दे वेहार विच कुझ हंकार आ चुक्का सी। आई गई संगत नाल इस तरां वरतदे सन जिवे ठाने विच दरोगे वेहार करदे हन। उनां नू इस गल दा गरब हो चुक्का सी उह निर-सवारथ इथे धरमसाल विच सेवा कर रहे हन बिनां किसे तलब तनखाह दे। गुरू साहब ने फिर दीवान विच इसे मसले ते वेख्यान दित्ता कि चंग्यायी करके जे बन्दा उहदा हंकार पाल लैदा है तां उह बन्दा वी खुआर हुन्दा है। हंकार चंग्यायी दा वी माड़ा।

गुरू साहब ने उस वेले दियां प्रचलत कथा कहाणियां विचो मिसालां दे दे के गुरसिक्खां नू उपदेश दित्ता कि हंकार तों बचो।

उनां दस्स्या कि वेखो ब्रहमा किद्धा अवतारी पुरश होया

है ते वेख लओ वेद रचन दा उनू जदों हंकार हो गया तां चारे वेद चोरी हो गए। अन्ना हो गया। फिर जदों निरबल हो के निरंकार अगे अरदासां कीतियां तां फिर किते उहदा उधार होया।

बल राजा किन्ना दानी होया है किन्ने उस जग कीते, पर गुरू वेहना होन करके हंकार कर गया ते सारा कीता करायआ खूह खाते विच पया।

राजा हरी चन्द दा ही वेख लयो। की उस तों वड्डा कोयी दानी हो सकदा है? पर जस लैन दे चकर विच, दान दा हंकार कर बैठा ते कक्खों हौला हो हो रुल्या।

मतलब संसार दी खेड दा ग्यान होना जरूरी है। कि किवे सारा हऊमे ते सच्च दे टकराय ते पसारा है।

हरणाखश आपनी बेवकूफी करके खुआर होया। मिसाल तुहाडे साहमने कि किवे नरायन प्रभु ने उहदा हंकार रेत दे कणां वागु खलार दित्ता। जदों कि नेक प्रहलाद दा उधार हुन्दा है।

रावन किद्धा वड्डा विदवान सी। चारे वेदां दा ग्याता। सिरफ इक हऊमे करके लंका वी गवायी ते मार्या वी गया।

सो जे नेकी कीती है तां उहदा गरब नही करनां।

गुरू साहब ने दीवान विच संगत दे नाल शबद गाव्या:

गउड़ी महला 1 ॥ ब्रहमै गरबु किया नही जान्या ॥ बेद की बिपति पड़ी पछुतान्या ॥ जह प्रभ सिमरे तही मनु मान्या ॥1 ॥ ऐसा गरबु बुरा संसारै ॥ जिसु गुरू मिले तिसु गरबु निवारै ॥1 ॥ रहाउ ॥ बलि राजा मायआ अहकारी ॥ जगन करै बहु भार अफारी ॥ बिनु गुर पूछे जाय पयारी ॥2 ॥ हरीचन्दु दानु करै जसु लेवै ॥ बिनु गुर अंतु न पाय अभवै ॥ आपि भुलाय आपे मति देवै ॥3 ॥ दुरमति हरणाखसु दुराचारी ॥ प्रभु नारायनु गरब प्रहारी ॥ प्रहलाद उधारे किरपा धारी ॥4 ॥ भूलो रावनु मुगधु अचेति ॥ लुटी लंका सीस समेति ॥ गरबि गया बिनु सतिगुर हेति ॥5 ॥ सहसबाहु मधु कीट महखासा ॥ हरणाखसु ले नखहु बिधासा ॥ दैत संघारे बिनु भगति अभ्यासा ॥6 ॥ जरासंधि कालजमुन संघारे ॥ रकतबीजु कालुनेमु बिदारे ॥ दैत संघारि संत निसतारे ॥7 ॥ आपे सतिगुरु सबदु बीचारे ॥ दूजै भाय दैत संघारे ॥ गुरमुखि साचि भगति निसतारे ॥8 ॥ बूडा दुरजोधनु पति खोयी ॥ रामु न जान्या करता सोयी ॥ जन कउ दूखि पचै दुखु होयी ॥9 ॥ जनमेजै गुर सबदु न जान्या ॥ क्यु सुखु पावै भरमि भुलान्या ॥ इकु तिलु भूले बहुरि पछुतान्या ॥10 ॥ कंसु केसु चांडूरु न कोयी ॥ रामु न चीन्या अपनी पति खोयी ॥ बिनु जगदीस न राखे कोयी ॥11 ॥ बिनु गुर गरबु न मेत्या जाय ॥ गुरमति धरमु धीरजु हरि नाय ॥ नानक नामु मिलै गुन गाय ॥

